Vol II Issue XII Jan 2013
Impact Factor : 0.2105
ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.12,Jan. 2013
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

सर्वेश्वर के नाटक साहित्य में राजनीतिक चेतना - एलोक शमा

एलोक शर्मा

शोध छात्र - हिन्दी विभाग बनस्थली - विद्यापीठ राज

सारांश

सर्वेश्वर दयाल सक्सैना जी स्वतंत्रता के पहले और बाद के सपनों के और अदर्शों के भागीदारा रहे क्योंकि उनका जन्म आजादी के पूर्न हुआ था | एक प्रकार से सर्वेश्वर स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात्काल की राजनीतिक् सामाजिक स्थितियों एवं घटनाओं के सक्रिय दर्शक रहे | उन्होंने अपने समाज एवं देश में फैली विसंगतियों विद्रूपताओं को देखा और वे आम आदमी की लड़ाई में रचनात्मक स्तर पर शामिल हो गये | अतः सर्वेश्वर का संवेदना पक्ष जो युगीन स्थितियों की जटिलता परिवेशव्याप्ती विसंगतियो़ विद्रूपताओं एवं अमानवीय संदर्भों की प्रचुरता के कारण उनके नाट्य साहित्य में अभिव्यक्त हुआ | आजादी के बाद साम्राज्यवादी शक्तियों और उपनिवेशवादी चरित्रों ने अमानवीयता पशुता मिथ्यादंभ और असांस्कृतिकरण को बढ़ावा मिला | प्रजातंत्र तानाशाही का पर्याय बन गया | इसके कारम भूख़ बेरोजगारी और भ्रष्टाचार समाज एवं देश में व्याप्त हो गये | सर्वेश्वर ने स्वतंत्रता के बाद देश की राजनीति में व्याप्त विडम्बनाओं एवं कार्यपध्दती में आई विद्रूपताओं राजनीतिक भ्रष्टाचात् शोषण् मिथ्यावाद् नेता व्यवस्था राजनीतिक प्रपंच् सत्तानुमुख राजनीत् चुनावी राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाओं की सत्यता आदि की अपने नाटकों "बकरी" "लड़ाई" "अब गरीबी हटाओ" "हिसाबकिताब" बाल नाटक - "लाख की नाक" में व्यंग्यात्मक रूप में अभिव्यक्त कर इन विसंगतियों एवं विद्रूपताओं के प्रति जनसमाज एवं देश में जागृति लाने का कार्य किया |

प्रस्तावना

सर्वेश्वर ने अपने नाट्य साहित्य में देश की राजनीति में आई विडम्बनाओ़ विसंगतियों जैसे नेता व्यवस्था एवं उनके भ्रष्ट आचरण् कुर्सी के प्रति आसक्ति़ अवसरवादिताा को व्यंग रूप में अभिव्यक्ति दी |

सर्वेश्वर ने "बेकरी" नाटक में दुर्जनसिंह् कर्मवीर एवं सत्यवीर जैसे भ्रष्ट राजनेता के माध्यम से राजनीति विसंगतियो़ विद्रूपताओं को उजागर किया़ हमारे नेता सच्चाई और ईमानदारी के नाम पर जनता की जेबे काटते हैं त्याग की बातों पर जेबे भरते हैं एवं सबको अपना समझने के नाम पर जनता पर अत्याचार एवं शोषण करते हैं | नाटककार ने बकरी नाटक में डाकू के पेशे को छोड़कर राजनीति में प्रवेश करने वाले दुर्जनसिंह व उसके साथियों द्वारा जो पूजा गर्ति तन मन धन उन्नायक जय हे[1] गाते हैं | उससे राजनीति में व्याप्त भ्रष्ट मानसिकता की ओर संकेत मिलता है | बकरी नाटक के दुर्जनसिंह् सत्यवीर एवं कर्मवीर को भिश्ती द्वारा गाये गति के सहारे राजनीति में आने की प्रेरणा मिलती है और वे शरीफ बनने का संकल्प लेते हैं परन्तु सिपाही़ उनसे उनकी योजना के बारे में पूछ लेता हैं इससे क्या होगा |[2]
प्रत्युत्तर में उन तीनों के उत्तर राजनीति में व्याप्त विसंगतियों की ओर संकेत करते है -

तीनों उसी से सब कुछ दीवान जी |
दुर्जनं हम मालामाल होंगे |
सत्यवीर् हमारी इज्जत होगी |
कर्मवीर् जनता हमारे इशारे पर चलेगी |[3]

इसी प्रकार "लड़ाई" नाटक में सर्वेश्वर ने नेताओं की अवसर वादिता़ झूँठफरेब़ शोषण् गलत नीतियों पर सत्यव्रत के माध्यम से प्रकाश डाला | नाटक में देश की राजनीतिक दुदद्दशा पर व्यंग्य करते हुये नाटककार लिखता है -

शारा देश वहीं का वहीं है | वहीं चक्कर काट रहा है | सच तो यह है कि किसी को कहीं पहुँचने की चिन्ता नहीं है | बस़ अपना डण्डा नचाते वही घूम रहे हैं |[4]
इसमें सर्वेश्वर ने वर्तमान राजनीतिज्ञों द्वारा झूँठे आश्वासनो़ ऊँची **2** बातैं करने पर व्यंग्य किया | क्योंकि आम जनता को झूँठे आश्वासन दिये जाते हैं पर उन्हें पूरा करने के लिये सार्थक प्रयास नहीं किये जाते |

लोकतांत्रिक व्यवस्था और देश की राष्ट्रीय राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष हैंचुनाव | सर्वेश्वर ने देश को राजनीतिज्ञों द्वारा चुनावों में कैसेंकैसे हथकण्डे अपनाये जाते हैं और चुनाव जीतने के पीछे उनकी क्या मानसिकता होती है आदि को अपने नाटकों में अभिव्यक्त किया | इस प्रकार चुनावों में चलने वाले जातिवाद् साम्प्रदाायिकता़ पूंजीवाद एवं तरह - **2** के गड़बड़ घोटालों को सर्वेश्वर ने अपने नाटकों "बकरी" एवं अब "गरिबी हटाओ" के माध्यम से उजागर किया | इन नाटकों में जातिवाद एवं हिंसावाद को उस संकृति की ओर इंगित किया जो सभी राजनीतिक दलों को अपने में समेट चुकी है | भारतीय संविधान में स्वतंत्रता का मूल अधिकारा है़ पर हमारी चुनाव प्रणाली तनानाशाही ठर्रे पर आधारित है | नेता जनता को डर्राधमका कर् प्रलोभन देकर चुनाव जीतते हैं |

"बकरी" नाटक में कर्मवीर एवं दुर्जनसिंह आदि के चरित्रों के माध्यम से ऐसे राजनीतिज्ञों को प्रतिनिधित्व किया जो पहले डाकू थे और राजनीति में प्रवेश करते हैं उनकी नजरों में चुनाव जीतने का अर्थ है - ऐशोआराम के साधन जुटाना |

Title : सर्वेश्वर के नाटक साहित्य में राजनीतिक चेतना - एलोक शमा
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] एलोक शर्मा **yr:2013 vol:2 iss:12**

सत्यवीर	´	दो साल में घर भर न जो पाए वो है उल्लू
		इससे है अच्छा डूब मरे पानी भर चुल्लू . . . .
दुर्जन	´	हम मर्द के बच्चे हैं नहीं कोई निठल्ली
सिपाही	´	सर्दी में बैंगलोर तो गर्मी में है कुल्लू |[5]

दुर्जनसिंह एवं उसके साथी चुनाव के बाद अपनी लूट खसोट से पॉच वर्षो के बदले दो वर्षो में अपना घर भरना चाहते हैं जो राजनीतिज्ञ ऐसा नहीं करता उसे वह उल्लू मानते हैं इसी प्रकार राजनीति में चुनाव प्रकिया में भ्रष्टाचार एवं पैसे से वोट करीदने पर भी व्यंग्य कर राजनीतिक विडम्बना का चित्र "बकरी" नाटक के कर्मवीर युवक के माध्यम से प्रस्तुत किया -

कितना पैसा दे रहा है हाथी वाला[6]

इस प्रकार युवक चुनाव प्रणाली एवं राजनीति में व्याप्त विसंगति पर व्यंग्य करते हुये कहता है -

"वोट चुनाव सब मजाक हो गया | सब झूंठ पर चल रहा है | गरिबों की बकरी पकड़कर उनसे पहले पैसे दुहा | अब वोट दुहे फिर कुर्सी और पद दुहेंगे ?"[7]

इस प्रकार राजनीति में चुनाव प्रणाली में व्याप्त विसंगति खोखलेपन पर तीव्र व्यंग्य किया | चुनाव आजकल धर्नदौलत पद प्रतिष्ठा पाने का साधन बन गये हैं | इसके लिये राजनीतिज्ञ जाति धर्म भाषा क्षेत्रियता और पैसों का सहारा लेते हैं | "अब गरीबी हटाओ" नाटक में मुख्यमंत्री द्वारा गांव का दौरा करने पर वे वोट हेतु सरपंच से जातिगत आधार पर जनसंख्या पूछते हैं | इससे अप्रत्यक्ष रूप से मुख्यमंत्री जी चुनाव के दौरान जातिवाद का बीज बोकर वोट बटोरने कि लिये प्रयास करेंगे जो कि मुख्यमंत्री जी के कथन से स्पष्ट हो रहा है -

ठीक है हरिजनों का समर्थन चाहिये |[8]

मुख्यमंत्री जी के द्वारा गांव दौरे पर गरीबी अटाओ के वादे देना एवं चुनाव जीतने के पश्चात्पांच वर्षो तक वहॉ न जाना एवं उसके हेर सार्थक प्रयास न करना राजनीतिक प्रपंच झूंठे वादे जैसी विसंगतियों की ओर संकेत करते हैं |

"अब गरीबी हटाओ" नाटक में गरीबी हटाओ कार्यक्रम में राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार झूंठे वादे एवं कल्याण योजनाओं में भ्रष्ट राजनीति की ओर संकेत किया स्वयं मुखुमंत्रीजी गरीबी हटाओ कार्यकम में कल्याण योजनाओं के कियान्वयन से पूर्व ही छः करोड़ बानवे अरब रूपये खर्च की बात स्वीकार करते हैं और उनके झूंठे आश्वासन उनके भाषण के माध्यम से नाटककार ने अभिव्यक्त किये -

"हम सबको मिलकर फारीबी हटानी चाहिये | आप पूछेंगे गरीबी कैसे हटेगी ऋ गरीबी हटेगी मेहनत करके उद्योग धन्धों को बढ़ावा देकर . . . .[9]

"अब तक पिछले सालों में हम गरीबी हटाओ कार्यकम पर छः करोड़ बानवे अरब रूपया खर्च कर चुके हैं लेकिन यह बड़ा देश है समय लगेगा साधनों में कमी है | दस साल हमें और दीजिये |"[10]

इसी प्रकार सर्वेश्वर ने अपने नाटकों में राजनीत में व्याप्त छद्म गॉधीवादियों की अवसरवादी प्रवृत्ति पर प्रहार किया जिनके कारम स्वतंत्रता पश्चात्राजनीति में मूल्यहीनता एवं भ्रष्टता का प्रवेश हुआ | राजनीति का आश्रय लेकर "बकरी" नाटक में राजनेता बकरी संस्थान बकरी स्मारक निधी गांधी शांति प्रतिष्ठान आदि स्मारक खोल कर उन तमाम राजनीतिक सामाजिक संश्थाओं के अस्तित्व एवं जांच आयोगों एवं विकास कार्यकमों की अर्थवत्ता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया जिनकी आड़ में राजनेता सरकारी अनुदान से प्राप्त धन का दुरूपयोग करते हैं |

"बकरी" नाटक के दुर्जनसिंह सत्यवीर आदि राजनेताओं ने गांधी के नाम पर उनके आदर्शा का दुरूपयोग कर पैसा लूटा | अतः इस प्रकार राजनीति में जो भ्रष्टाचार है उसको सर्वेश्वर ने बकरी नाटक में दुर्जनसिंह के माध्यम से व्यंग्यात्मक रूप में अभिव्यक्त कर चोट की | इसी प्रकार 'लाख की नाक' बाल नाटक में सर्वेश्वर ने राजनीति में व्याप्त रिश्वतखोरी भ्रष्टाचार को राज नाकड़ादिन्न के मंत्री नासिकाबंधू के माध्यम से उजागर किया वह एक भ्रष्ट एवं रिश्वतखोर है जो कि युध्द के लिये खरीदे गये हथियारों का चयन दलाली के आधार पर करता है जो लौहार अधिक कमीशन देता है उसके शस्त्र ही खरीदे जाते हैं | परिणामस्वरूप देश को युध्द में पराजय का मुँह देखना पड़ता है |

लौहार नहीं लालची है वह घूंसखोर है जो पैसा खिलाये उसकी तलवार अच्छी जो पैसा न दे उसकी तलवार गंदी |[11]

प्रस्तुत कथन समसामयिक राजनीतिक संदर्भो में राजनीत में उन नेताओं पर व्यंग्य है जो शस्त्रों की खरीद में रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार में लिप्त है |

अतः निष्कर्ष रूप से सर्वेश्वर ने स्वतंत्रता पश्चात्देश की राजनीति में व्यापत विडम्बनाओं जैसे - भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी चुनावी राजनीति वोट नीति गांधी के नाम एवं आदर्शों के दुरूपयोग नेता व्यवस्था झूंठे नारे एवं वादे राजनीतिक शोषणा एवं राजनीतक सेवा संस्थाओं की सत्यता विकास योजनाओं की वास्तविकता आदि विद्रुपताओं को अपने नाटकों 'बकरी सब गरीबी हटाओ' बाल नाटकों में 'लाख की नाक में दुर्जनसिंह कर्मवीर एवं नासिकारंधु मंत्री पात्रों के माध्यम से राजनीति में व्याप्त इन विडम्बनाओं विद्रुपताओं को प्रस्तुत किया और जन मानस में इन विद्रुपताओं के प्रति व्यंग्यात्मक रूप से नाटकों में अभिव्यक्त कर राजनीति में व्याप्त विडम्बनाओं के प्रति आकोश व्यक्त कर चेतना लाने का प्रयास किया |

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net